।। श्रीहरिः ।।

जगद्गुरु श्रीमद्वल्लभाचार्य के सम्प्रदाय प्रमाण

उत्सव तथा व्रतन की टीप

विक्रम संवत् २०८० नल नाम संवत्सरे ई. स. 2023-2024

श्री वल्लभाब्द ५४५ - ५४६ शालिवाहन शके १९४५ शोभन नाम संवत्सरे

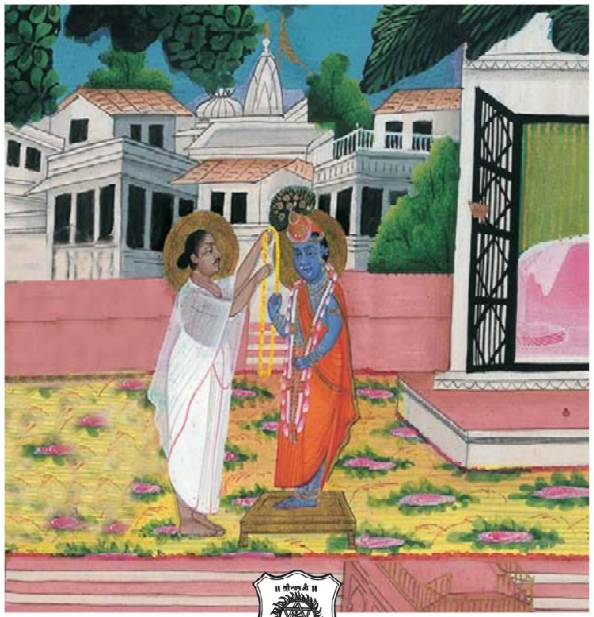

जगद्गुरु श्रीमद्वल्लभाचार्य प्रधानपीठस्थित
आचार्यवर्य्य गोस्वामी तिलकायित
श्री १०८ श्री इन्द्रदमनजी (श्री राकेशजी) महाराज की आज्ञासूं प्रकाशित

प्रकाशक : विद्याविभागाध्यक्ष, मन्दिर मण्डल, श्री नाथद्वारा

आचार्यवर्य्य गोस्वामी तिलकायित

श्री १०८ श्री इन्द्रदमनजी (श्री राकेशजी) महाराज

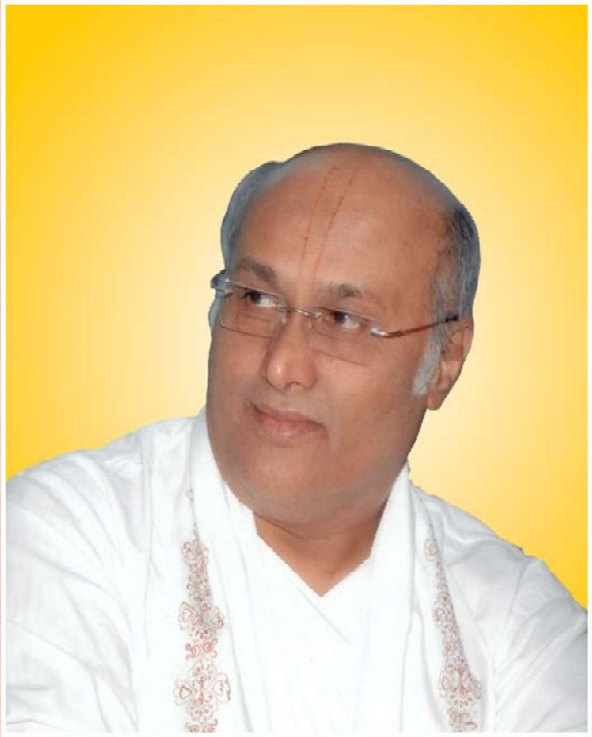

नाथद्वारा

जन्मतिथि - फाल्गुन शुक्ल ७
विक्रम संवत् - २००६

जन्म तारीख - २४ फरवरी
सन - १९५०

सर्वाम्नायमयेन येन वहताऽन्तःपुण्डरीकेक्षणं
हृत्पद्मानि विकासितानि सुपथा व्यक्तीकृता हर्षिताः।
हंसालोचनरोधिनः प्रमथिता वादाः प्रमादावहा
गोभिः कर्म सतां प्रवर्तितमसौ श्रीवल्भार्कोऽवतात्।।
श्री भारतमार्तण्डमहाभागाः।
निःसाधन समोद्धार करणाय समागताः।
श्रीमन्तो वल्लभाचार्याः कृपयन्तु सदामयि।।
सर्वदा ध्यात्म तल्लीनं, श्रीमन्तं प्रियदर्शनम्।
इन्द्रदमनमाचार्यं, पीठाध्यक्षं नमाम्यहम्।।
आर्त्रत्राण प्रतिज्ञाय शुद्धाद्वैतावलम्बिने।
श्रीनाथ पीठाधिष्ठात्रे राकेशाय वयं नुमः।।

प्रति १,००,००० *{न्योछावर १०/- रुपया}*

निवेदन

पुष्टिमार्गीय विचारों के प्रचारार्थ पूज्यपाद आचार्यवर्य्य गोस्वामितिलकायित श्री १०८ श्री इन्द्रदमनजी {श्री राकेशजी} महाराज की आज्ञा से टिप्पणी के अन्त में ध्वजाजी महात्म्य का लेख पृष्ठ ५२ पर प्रकाशित किया है। आशा है वैष्णव बन्धु इन उपदेशों से लाभ लेकर हमारे प्रयास को सफल बनायेंगे।

जिनको तिथ्यादिक की विशेष जानकारी अपेक्षित हो उनको यहां से प्रकाशित होने वाले श्रीनाथ पंचांग को मँगवा लेना चाहिये अथवा तत्तत्प्रान्तों की तिथ्यादिक की विशेष जानकारी अपेक्षित हो तो तत्तत्प्रान्तों से प्रकाशित होने वाले दृश्य गणितानुसारी पंचांग को मंगवा लेना चाहिये।

अध्यक्ष
विद्या विभाग मन्दिर मण्डल, नाथद्वारा

नोट : पुष्टिमार्ग सम्बन्धी विशेष जानकारी वेबसाइट www.nathdwara.in/ www.nathdwaratemple.org के द्वारा भी आप प्राप्त कर सकते है।

वल्लभाब्द ५४५ **चैत्र शुक्लपक्षः** विक्रमाब्द २०८०

तिथि	वार	दि.	उत्सव
१	बुध	22	मार्च, सन् 2023 संवत्सरोत्सवः। इष्टिः।
२	गुरु	23	
३	शुक्र	24	गणगौरी। (चूंदड़ी गणगौर)
४	शनि	25	पंचरंगी लहरियाँ (हरि गणगौर)
५	रवि	26	गुलाबी गणगौर
६	सोम	27	श्री गुसांईजी के छट्ठेलालजी श्री यदुनाथजी को उत्सव (१६१५) केसरी गणगौर एवं यमुना छट्ठ।
७	मंगल	28	
८	बुध	29	
९	गुरु	३०	रामनवमी व्रतम्।
१०	शुक्र	31	रामनवमी व्रत की पारणा।
११	शनि	1	अप्रेल, कामदा एकादशी व्रतम्। श्री वल्लभाचार्य चरण के उत्सव की बधाई।
१२	रवि	2	
१३	सोम	3	
१३	मंगल	4	
१४	बुध	5	
१५	गुरु	6	इष्टिः।

वल्लभाब्द ५४५	वैशाख (गु. चैत्र) कृष्णपक्षः		विक्रमाब्द २०८०
तिथि	वार	दि.	उत्सव
१	शुक्र	7	
२	शनि	8	
३	रवि	9	
४	सोम	10	
५	मंगल	11	
७	बुध	12	श्री विट्ठलनाथजी को पाटोत्सव।
८	गुरु	13	
९	शुक्र	14	मेष संक्रान्ति सतुआ उत्थापन अथवा भोग में पुण्यकाल मध्याह्न से लेकर सूर्यास्त पर्यन्त। तामे भी संक्रान्ति के पास के २ घंटा तक अति मुख्य पुण्यकाल है। अब के यह संक्रान्ति ९ शुक्र कूं दिन के २ बजके ५९ मिनिट पर बैठी है। तासूं पुण्यकाल आज मान्यो जायेगो। श्री कूं भोग धरे पीछे दान श्राद्धादि करने।
१०	शनि	15	पांच स्वरूप को उत्सव नित्य लीलास्थ गोस्वामि तिलकायित श्री १०८ श्री गोवर्द्धनलालजी महाराज कृत।
११	रवि	16	वरूथिनी एकादशी व्रतम्। श्री वल्लभाचार्यजी (श्री महाप्रभुजी) को उत्सव (१५३५) श्री वल्लभाब्द ५४६ को प्रारम्भः।
१२	सोम	17	
१३	मंगल	18	
१४	बुध	19	
३०	गुरु	20	इष्टिः।

वल्लभाब्द ५४६	वैशाख शुक्लपक्षः		विक्रमाब्द २०८०
तिथि	वार	दि.	उत्सव
१	शुक्र	21	
२	शनि	22	
३	रवि	23	अक्षय तृतीया चन्दन यात्रा त्रेतायुगादि जलकुम्भदानम्।
४	सोम	24	
५	मंगल	25	
६	बुध	26	
७	गुरु	27	तिलकायित श्री लालगिरधारीजी महाराज को उत्सव (१६९०)
८	शुक्र	28	
९	शनि	29	
१०	रवि	30	
११	सोम	1	मई, मोहिनी एकादशी व्रतम् ।
१२	मंगल	2	
१३	बुध	3	
१४	गुरु	4	श्री नृसिंह जयन्ती व्रतम्।
१५	शुक्र	5	

वल्लभाब्द ५४६	ज्येष्ठ (गु. वैशाख) कृष्णपक्षः		विक्रमाब्द २०८०
तिथि	वार	दि.	उत्सव
१	शनि	6	इष्टिः।
२	रवि	7	चार स्वरूप को उत्सव ति. श्री दाऊजी महाराज कृत।
३	सोम	8	कली के शृंगार को आरम्भ।
४	मंगल	9	
५	बुध	10	
६	गुरु	11	
७	शुक्र	12	
८	शनि	13	
१०	रवि	14	
११	सोम	15	अपरा एकादशी व्रतम्।
१२	मंगल	16	
१३	बुध	17	
१४	गुरु	18	
३०	शुक्र	19	

वल्लभाब्द ५४६	ज्येष्ठ शुक्लपक्षः		विक्रमाब्द २०८०
तिथि	वार	दि.	उत्सव
१	शनि	20	इष्टिः।
२	रवि	21	
३	सोम	22	
४	मंगल	23	
५	बुध	24	श्री के नाव को मनोरथ।
६	गुरु	25	आज रात्रि के ६ बजे सूं ले के आषाढ़ कृष्ण ५ गुरु को सायं ६ बजके ५४ मिनिट तक सूर्य कूं रोहिणी नक्षत्र है, ता सूं इन दिनन में श्री के अंग में चन्दन धरावनो प्रशस्त है।
७	शुक्र	26	
७	शनि	27	
८	रवि	28	
६	सोम	29	
१०	मंगल	30	श्री गंगादशमी, दशहरा, श्री यमुनाजी को उत्सव माने है।
११	बुध	31	निर्जला एकादशी व्रतम्।
१२	गुरु	1	जून
१३	शुक्र	2	तिलकायित श्री गिरधारीजी महाराज को उत्सव (१६००)
१४	शनि	3	स्नान को जल भरनो सांझ कूं जल को अधिवासन करनो।
१५	रवि	4	ज्येष्ठाभिषेक (स्नानयात्रा)। इष्टिः।

वल्लभाब्द ५४६	आषाढ़ (गु. ज्येष्ठ) कृष्णपक्षः		विक्रमाब्द २०८०
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	सोम	5	
३	मंगल	6	
४	बुध	7	
५	गुरु	8	
६	शुक्र	9	
७	शनि	10	
८	रवि	11	
९	सोम	12	
१०	मंगल	13	
११	बुध	14	योगिनी एकादशी व्रतम्।
१२	गुरु	15	
१३	शुक्र	16	
१४	शनि	17	
३०	रवि	18	तिलकायित बड़े श्री गिरिधारीजी महाराज को उत्सव (१८२५)। इष्टिः।

वल्लभाब्द ५४६	आषाढ़ शुक्लपक्षः		विक्रमाब्द २०८०
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	सोम	19	
२	मंगल	20	
३	बुध	21	रथयात्रा।
४	गुरु	22	
५	शुक्र	23	श्री द्वारकाधीश जी को पाटोत्सवः।
६	शनि	24	कसूंभा छठ। षष्ठी पण्डगू। तिलकायित श्री गोविन्दजी महाराज गादी बिराजे सो उत्सव तथा तिलकायित **श्री इन्द्रदमन जी (श्री राकेश जी)** महाराज गादी बिराजे (२०५७)।
७	रवि	25	
८	सोम	26	
९	मंगल	27	
१०	बुध	28	बैंगन दशमी।
११	गुरु	29	देवशयनी एकादशी व्रतम्। चातुर्मास्य नियमारम्भः। कली के शृंगार पूर्ण। पूज्यपाद तिलकायित महाराज श्री की आज्ञा से परिवर्तन एवं परिवर्द्धन किया जा सकेगा।
१२	शुक्र	30	
१३	शनि	1	जुलाई
१४	रवि	2	
१५	सोम	3	पर्वात्मक उत्सव चातुर्मास्य नियमारम्भः। एकादशी कूं न भयो होय तो द्वादशी अथवा पूर्णिमा के दिन करनो तामे पूर्णिमा मुख्य।

वल्लभाब्द ५४६	शुद्ध श्रावण (गु. आषाढ़) कृष्णपक्षः		विक्रमाब्द २०८०
तिथि	वार	दि.	उत्सव
१	मंगल	4	इष्टिः।
२	बुध	5	हिन्दोलारम्भः। पूर्व दिन वैधृति योग होयवे सूं आज।
३	गुरु	6	श्री चन्द्रमाजी को पाटोत्सवः। चतुर्थी को क्षय होयवे सूं आज।
५	शुक्र	7	
६	शनि	8	
७	रवि	9	
८	सोम	10	जन्माष्टमी की बधाई।
९	मंगल	11	
१०	बुध	12	तिलकायित श्री गोवर्द्धनेश जी महाराज को उत्सव। हाण्डी उत्सव (१७६३)।
११	गुरु	13	कामिका एकादशी व्रतम्।
१२	शुक्र	14	
१३	शनि	15	
१४	रवि	16	
३०	सोम	17	सोमवती अमावस, हरियाली अमावस।

वल्लभाब्द ५४६	अधिक श्रावण शुक्लपक्षः		विक्रमाब्द २०८०
तिथि	वार	दि.	उत्सव
१	मंगल	18	इष्टिः। पुरुषोत्तम मास को आरम्भ। कांस्य के पात्र में ३३ पूआ अथवा पक्वान्न भोग धर के वा को प्रतिदिवस दान या मास में प्रशस्त है। नित्य न बने तो हूं प्रथम दिवस तथा आगे द्वादशी में लिखे ५ पर्वन में अवश्य करनो दान को संकल्प एवं श्लोक पृष्ठ २८-२९ पर लिखे हैं। पुरुषोत्तम मास सम्बन्धी भोग स्नान दानादि नियमन को आरम्भ या मास में नित्य सेवा को विशेष नियम तथा भगवान्नाम जाप गीता भगवतादिकन के पाठ यथाशक्ति ब्राह्मण भोजन गोपूजनादि जो बन सके तो कछूं भी सत्कृत्य नित्य अवश्य करनो।
२	बुध	19	
३	गुरु	20	
३	शुक्र	21	या दिन व्यतीपात हे तासूं कछु भी भोग में विशेष धरनो तथा थोड़ी बहुत कछु भी दान ब्राह्मण भोजन यथाशक्ति करनो।
४	शनि	22	
५	रवि	23	
६	सोम	24	
७	मंगल	25	
८	बुध	26	
९	गुरु	27	
१०	शुक्र	28	
११	शनि	29	कमला एकादशी व्रतम्।
१२	रवि	30	या दिन वैधृति हे तासूं ये भी अति पुण्यकाल हे। तासूं कछु भी श्री के मनोरथ दानादिक यथाशक्ति करनो।
१३	सोम	31	
१५	मंगल	1	अगस्त, पुण्यदिनम्।

वल्लभाब्द ५४६	अधिक श्रावण कृष्णपक्षः	विक्रमाब्द २०८०

तिथि	वार	दि.	उत्सव
१	बुध	2	इष्टिः।
२	गुरु	3	
३	शुक्र	4	
४	शनि	5	
५	रवि	6	
७	सोम	7	
८	मंगल	8	
९	बुध	9	
१०	गुरु	10	
११	शुक्र	11	
११	शनि	12	कमला एकादशी व्रतम्।
१२	रवि	13	
१३	सोम	14	
१४	मंगल	15	
३०	बुध	16	पुण्यदिनम्। पुरुषोत्तम मास के नियम की समाप्तिः।

वल्लभाब्द ५४६	शुद्ध श्रावण शुक्लपक्षः	विक्रमाब्द २०८०

तिथि	वार	दि.	उत्सव
१	गुरु	17	इष्टिः।
२	शुक्र	18	
३	शनि	19	ठकुरानी तीज मधुस्रवा।
४	रवि	20	
५	सोम	21	नाग पंचमी।
६	मंगल	22	
७	बुध	23	
८	गुरु	24	
९	शुक्र	25	सात स्वरूप को उत्सव। नित्य लीलास्थ गोस्वामी तिलकायित १०८ श्री गोविन्दलालजी महाराज कृत।
१०	शनि	26	
११	रवि	27	पुत्रदा एकादशी व्रतम्। पवित्रारोपणं प्रातः शृंगार में याही दिन सात स्वरूप कूं पवित्रा धरायवे को विशेष उत्सव। नित्य लीलास्थ गोस्वामि तिलकायित १०८ श्री गोविन्दलाल जी महाराज कृत।
१२	सोम	28	गुरुओं को पवित्रा धरावने।
१३	मंगल	29	श्री ऋग्वेदीन की श्रावणी।
१४	बुध	30	श्री विट्ठलेशराय जी महाराज को उत्सव (१६५७) आपस्तम्भ, हिरण्य केशीय, बोधायन काण्व माध्यन्दिन प्रभृति, सर्व यजुर्वेदीन, अथर्ववेदीन तथा तैतरीयन की श्रावणी।
१५	गुरु	31	रक्षाबन्धनं प्रातः शृंगार में ७ बजके ६ मिनिट पूर्व, गुसांई जी के ज्येष्ठ पुत्र श्री गिरधरजी के लालजी श्री दामोदरजी महाराज को उत्सव (१६३२), गोस्वामि तिलकायित श्री १०८ श्री गोवर्द्धनलाल जी महाराज को उत्सव (१९१७) प्रतिपदा को क्षय होयवे सूं आज। इष्टिः।

वल्लभाब्द ५४६	भाद्रपद (गु. श्रावण) कृष्णपक्षः	विक्रमाब्द २०८०

तिथि	वार	दि.	उत्सव
२	शुक्र	1	सितम्बर, हेम हिन्दोला।
३	शनि	2	कज्जली तीज।
४	रवि	3	हिन्दोला विजय।
५	सोम	4	
६	मंगल	5	
७	बुध	6	शयन में षष्ठी को उत्सव। विष्णुस्वामि प्राकट्योत्सव।
८	गुरु	7	जन्माष्टमी व्रतम्।
९	शुक्र	8	नन्द महोत्सव।
१०	शनि	9	
११	रवि	10	अजा एकादशी व्रतम्।
१२	सोम	11	
१३	मंगल	12	
१४	बुध	13	काका वल्लभजी को उत्सव (१७०३)।
३०	गुरु	14	कुशग्रहणी अमावस।
३०	शुक्र	15	इष्टिः।

वल्लभाब्द ५४६	भाद्रपद शुक्लपक्ष	विक्रमाब्द २०८०

तिथि	वार	दि.	उत्सव
१	शनि	16	राधाष्टमी की बधाई।
२	रवि	17	सामवेदीन की श्रावणी।
३	सोम	18	
४	मंगल	19	गणेश चतुर्थी।
५	बुध	20	ऋषि पंचमी, द्वितीय स्वरूपोत्सव।
६	गुरु	21	ति. श्री विट्ठलेशजी महाराज को उत्सव (१७४४)।
७	शुक्र	22	
८	शनि	23	राधाष्टमी।
९	रवि	24	
१०	सोम	25	नवलक्ष ग्रंथकर्त्ता श्री पुरुषोत्तमजी महाराज को उत्सव (१७१४), एकादशी को क्षय होयवे सूं आज।
१२	मंगल	26	परिवर्तिनी एकादशी व्रतम् (दान एकादशी), वामन द्वादशी।
१३	बुध	27	
१४	गुरु	28	
१५	शुक्र	29	सांझी को आरम्भ। श्राद्धपक्ष को आरम्भ ताको निर्णय पृष्ठ ३० पर एवं श्राद्धपक्ष को संकल्प पृष्ठ ३१ पर लिख्यो है।

वल्लभाब्द ५४६	आश्विन (गु.भाद्रपद) कृष्णपक्षः	विक्रमाब्द २०८०

तिथि	वार	दि.	उत्सव
१	शनि	30	
२	रवि	1	अक्टूबर
३	सोम	2	
५	मंगल	3	श्री हरिरायजी को उत्सव (१६४७)
६	बुध	4	
७	गुरु	5	
७	शुक्र	6	
८	शनि	7	श्री महाप्रभुजी के ज्येष्ठ पुत्र श्री गोपीनाथजी के पुत्र श्री पुरुषोत्तमजी को उत्सव (१५८७)।
९	रवि	8	
१०	सोम	9	
११	मंगल	10	इन्दिरा एकादशी व्रतम् (महादान)।
१२	बुध	11	श्री महाप्रभुजी के ज्येष्ठ पुत्र श्री गोपीनाथजी को उत्सव (१५६७)।
१३	गुरु	12	श्री गुसांईजी के तीसरे लाल जी श्री बालकृष्णजी को उत्सव (१६०६)।
१४	शुक्र	13	
३०	शनि	14	सर्वपितृ अमावस, कोट की आरती और सांझी की समाप्ति।

वल्लभाब्द ५४६	आश्विन शुक्लपक्षः	विक्रमाब्द २०८०

तिथि	वार	दि.	उत्सव
१	रवि	15	इष्टिः। नवरात्रारम्भः। मातामह श्राद्ध।
२	सोम	16	
३	मंगल	17	
४	बुध	18	श्री दामोदरजी (श्री दाऊजी) महाराज को उत्सव (दुहेरा मनोरथ) (१९५४)।
५	गुरु	19	
६	शुक्र	20	सरस्वती पूजनारम्भः।
७	शनि	21	
८	रवि	22	
९	सोम	23	दशहरा (विजयादशमी)। सरस्वती विसर्जनम्।
१०	मंगल	24	श्री गिरधरजी के प्रथम लालजी श्री मुरलीधरजी को उत्सव।
११	बुध	25	पाशांकुशा एकादशी व्रतम्।
१२	गुरु	26	
१३	शुक्र	27	श्री बालकृष्णजी को पाटोत्सवः। रासोत्सवः, पूर्णिमा शनि कूं चन्द्रग्रहण होयवे सूं आज।
१५	शनि	28	खण्डग्रास चन्द्रग्रहण ताको निर्णय पृ. ३२ व ३३ पर लिख्यो है। कार्त्तिक स्नानारम्भः।

वल्लभाब्द ५४६	कार्तिक (गु. आश्विन) कृष्णपक्षः		विक्रमाब्द २०८०
तिथि	वार	दि.	उत्सव
१	रवि	29	इष्टिः।
२	सोम	30	
३	मंगल	31	
४	बुध	1	नवम्बर
५	गुरु	2	
६	शुक्र	3	
७	शनि	4	
८	रवि	5	
९	सोम	6	
१०	मंगल	7	
१०	बुध	8	
११	गुरु	9	रमा एकादशी व्रतम्।
१२	शुक्र	10	
१३	शनि	11	धनतेरस।
१४	रवि	12	रूप चतुर्दशी (अभ्यंग), दीपावली (दीपोत्सव) हटड़ी (गोकर्ण जागरणम्) कान जगाई।
३०	सोम	13	सोमवती अमावस योग दोपहर २ बजके ५७ मिनिट तक, अन्नकूटोत्सव। गोवर्द्धन पूजा।

वल्लभाब्द ५४६	कार्तिक शुक्लपक्षः		विक्रमाब्द २०८०
तिथि	वार	दि.	उत्सव
१	मंगल	14	इष्टिः। गुर्जराणां २०८० वर्षारम्भः।
२	बुध	15	यम द्वितीया (भाईदूज)।
३	गुरु	16	
४	शुक्र	17	
५	शनि	18	
६	रवि	19	श्री नवनीत प्रभु को व्रज में पधरायवे को विशेष उत्सव। गो.ति. १०८ श्री इन्द्रदमन जी (श्री राकेश जी) महाराज कृत (२०६३), सप्तमी को क्षय होयवे सूं आज।
८	सोम	20	गोपाष्टमी।
९	मंगल	21	अक्षय नवमी। कृत युगादि। कूष्माण्डदानम्।
१०	बुध	22	
११	गुरु	23	प्रबोधिनी एकादशी व्रतम् देवोत्थापनं प्रातः शृंगार में।
१२	शुक्र	24	श्री गुसांई जी के प्रथम लालजी श्री गिरधरजी को उत्सव (१५९७) तथा पंचमलाल जी श्री रघुनाथजी को उत्सव (१६११)।
१३	शनि	25	
१४	रवि	26	ति. श्री गोविन्दजी महाराज को उत्सव (१८७६)।
१५	सोम	27	चार स्वरूप को उत्सव। नित्य लीलास्थ गोस्वामि तिलकायित श्री १०८ श्री गोविन्दलाल जी महाराज कृत। चातुर्मास्य तथा कार्तिक के नियम की समाप्तिः। गोपमासारम्भः।

वल्लभाब्द ५४६	मार्गशीर्ष (गु. कार्तिक) कृष्णपक्षः		विक्रमाब्द २०८०
तिथि	वार	दि.	उत्सव
१	मंगल	28	इष्टिः। व्रतचर्या अथवा गोपमासारम्भः।
२	बुध	29	
३	गुरु	30	
४	शुक्र	1	दिसम्बर, छः स्वरूप को उत्सव। तिलकायित श्री दाऊजी महाराज कृत।
५	शनि	2	
६	रवि	3	
७	सोम	4	गो.ति. १०८ श्री गोविन्दलालजी महाराज को उत्सव (१९८४)
८	मंगल	5	श्री गुसांई जी के दूसरे लालजी श्री गोविन्दरायजी को उत्सव (१५९९)।
९	बुध	6	
१०	गुरु	7	घटा को आरम्भ (हरिघटा)।
११	शुक्र	8	
१२	शनि	9	उत्पत्ति एकादशी व्रतम्। श्री नवनीत प्रभु कूं व्रज सूं नाथद्वारा निजमंदिर में पधरायवे को उत्सव। गो.ति. १०८ श्री इन्द्रदमनजी (श्री राकेशजी) महाराज कृत (२०६३)।
१२	रवि	10	
१३	सोम	11	श्री गुसांईजी के सातवे लालजी श्री घनश्यामजी को उत्सव (१६२८)
३०	मंगल	12	श्यामघटा।

वल्लभाब्द ५४६	मार्गशीर्ष शुक्लपक्षः		विक्रमाब्द २०८०
तिथि	वार	दि.	उत्सव
१	बुध	13	इष्टिः।
२	गुरु	14	दूज को चन्दा।
३	शुक्र	15	
४	शनि	16	धनुर्मासारम्भः।
५	रवि	17	श्री मदनमोहनजी को पाटोत्सवः।
६	सोम	18	
७	मंगल	19	श्री गुसांईजी के चतुर्थ लालजी श्री गोकुलनाथजी को उत्सव (१६०८)।
८	बुध	20	सातस्वरूप को उत्सव, श्री गोवर्द्धनेशजी महाराज कृत।
९	गुरु	21	श्री गुसांईजी के उत्सव की बधाई (लालघटा)।
१०	शुक्र	22	
१२	शनि	23	मोक्षदा एकादशी व्रतम्।
१३	रवि	24	
१४	सोम	25	
१५	मंगल	26	छप्पनभोग बलदेवजी को उत्सव कितनेक माने है। गोपमास की समाप्ति। इष्टिः।

वल्लभाब्द ५४६	**पौष (गु. मार्गशीष) कृष्णपक्षः**	विक्रमाब्द २०८०	
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	बुध	27	इष्टिः। नित्य लीलास्थ गोस्वामि तिलक श्री १०८ श्री दाऊजी (श्री राजीवजी) महाराज को उत्सव (२००५)।
२	गुरु	28	
२	शुक्र	29	
३	शनि	30	
४	रवि	31	
५	सोम	1	जनवरी, सन् २०२४ का प्रारम्भः।
६	मंगल	2	
७	बुध	3	श्री गुसांईजी के ज्येष्ठ पौत्र श्री गोविन्दजी के पुत्र श्री कल्याणरायजी को उत्सव (१६२५)।
८	गुरु	4	
९	शुक्र	5	श्री मत्प्रभुचरण श्री विट्ठलनाथजी को उत्सव (१५७२)।
१०	शनि	6	
११	रवि	7	सफला एकादशी व्रतम्। फल अवश्य भोग धरनो, फलन के दान अवश्य करनो। तिलकायित श्री गोविन्दजी महाराज को उत्सव (१७६९)।
१२	सोम	8	
१३	मंगल	9	
१४	बुध	10	
३०	गुरु	11	गोस्वामि तिलक श्री १०८ श्री इन्द्रदमनजी (श्री राकेशजी) महाराज के पुत्र चि.गो.१०५ **श्री भूपेशकुमारजी (श्री विशाल बावा)** को जन्मदिन (२०३७)।

वल्लभाब्द ५४६	**पौष शुक्लपक्षः**	विक्रमाब्द २०८०	
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	शुक्र	12	इष्टिः।
२	शनि	13	
३	रवि	14	भोगी धनुर्मास की समाप्ति।
५	सोम	15	मकर संक्रान्तिः। तिलवा गोपीवल्लभ या राजभोग में ता पीछे दान श्राद्धादि करने। अबके यह संक्रान्ति ४ रवि कूं रात्रि के २ बजके ४४ मिनिट पर बैठे है तासूं पुण्यकाल आज सूर्योदय से लेके दिन के ३ बजके २३ मिनिट पर्यन्त है। तामे भी संक्रान्ति के पास के दो घण्टा अति मुख्य पुण्यकाल है। उत्तरायण।
६	मंगल	16	नित्य लीलास्थ गो. श्री १०८ श्री दामोदरलाल जी महाराज को उत्सव (१९५३)।
७	बुध	17	
८	गुरु	18	
९	शुक्र	19	
१०	शनि	20	
११	रवि	21	पुत्रदा एकादशी व्रतम्।
१२	सोम	22	
१३	मंगल	23	
१४	बुध	24	
१५	गुरु	25	माघ स्नानारम्भः।

वल्लभाब्द ५४६	माघ (गु. पौष) कृष्णपक्षः		विक्रमाब्द २०८०
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	शुक्र	26	इष्टिः।
२	शनि	27	
३	रवि	28	
४	सोम	29	
४	मंगल	30	
५	बुध	31	
६	गुरु	1	फरवरी
७	शुक्र	2	पीली घटा।
८	शनि	3	बड़े दामोदरजी (श्री दाऊजी) महाराज को उत्सव (१७११)
९	रवि	4	
१०	सोम	5	
११	मंगल	6	षट्तिला एकादशी व्रतम्। तिल की वस्तु अवश्य भोग धरनो। तिल के दान भक्षणादि करने।
१२	बुध	7	
१३	गुरु	8	
१४	शुक्र	9	

वल्लभाब्द ५४६	माघ शुक्लपक्षः		विक्रमाब्द २०८०
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	शनि	10	इष्टिः।
२	रवि	11	
३	सोम	12	
४	मंगल	13	श्री मुकुन्दरायजी को पाटोत्सवः।
५	बुध	14	बसन्त पंचमी।
६	गुरु	15	
७	शुक्र	16	
८	शनि	17	
९	रवि	18	
१०	सोम	19	
११	मंगल	20	जया एकादशी व्रतम्।
१२	बुध	21	
१३	गुरु	22	
१४	शुक्र	23	
१५	शनि	24	माघ स्नान की समाप्ति। होरी डांडो दण्डारोपणं, आज सूर्योदयात् पूर्व प्रातः ४ बजके ४६ मिनिट पश्चात्, याही समय धमार को आरम्भ, रोपणी को उत्सव।

वल्लभाब्द ५४६	फाल्गुन (गु. माघ) कृष्णपक्षः		विक्रमाब्द २०८०
तिथि	वार	दि.	उत्सव
१	रवि	25	इष्टिः।
२	सोम	26	
३	मंगल	27	
४	बुध	28	
५	गुरु	29	
६	शुक्र	1	मार्च
६	शनि	2	
७	रवि	3	श्रीनाथजी को पाटोत्सवः।
८	सोम	4	
९	मंगल	5	
११	बुध	6	
१२	गुरु	7	विजया एकादशी व्रतम्।
१३	शुक्र	8	
१४	शनि	9	
३०	रवि	10	इष्टिः।

वल्लभाब्द ५४६	फाल्गुन शुक्लपक्षः		विक्रमाब्द २०८०
तिथि	वार	दि.	उत्सव
१	सोम	11	
२	मंगल	12	
४	बुध	13	
५	गुरु	14	
६	शुक्र	15	
७	शनि	16	श्री मथुरेशजी को पाटोत्सवः। **श्री गोस्वामि तिलकायित १०८ श्री इन्द्रदमनजी (श्री राकेशजी) महाराज** को जन्मदिन (२००६)
८	रवि	17	होलिकाष्टकारम्भः।
९	सोम	18	
१०	मंगल	19	
११	बुध	20	आमलकी (कुंज) एकादशी व्रतम्।
१२	गुरु	21	
१३	शुक्र	22	
१३	शनि	23	
१४	रवि	24	होली, होलिका प्रदीपनं १५ सोम के सूर्योदयात् ६ बजके ३६ मिनिट पूर्व।
१५	सोम	25	दोलोत्सव (डोल), धूलिवन्दन (धुरेण्डी)।

वल्लभाब्द ५४६	चैत्र (गु. फाल्गुन) कृष्णपक्षः		विक्रमाब्द २०८०
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	मंगल	26	इष्टिः। द्वितीया पाट।
२	बुध	27	
३	गुरू	28	
४	शुक्र	29	
५	शनि	30	
६	रवि	31	
७	सोम	1	अप्रेल, **श्री गो.ति. १०८ श्री इन्द्रदमनजी (श्री राकेशजी) महाराज** के पौत्र **गो.चि. १०५ श्री भूपेश कुमार जी (श्री विशाल बावा साहब)** के पुत्र **गो.चि. १०५ श्री लाल गोविन्द जी (श्री अधिराज बावा)** को जन्मदिन (२०७५)
८	मंगल	2	
९	बुध	3	
१०	गुरु	4	
११	शुक्र	5	पापमोचिनी एकादशी व्रतम्।
१२	शनि	6	
१३	रवि	7	
३०	सोम	8	सोमवती अमावस, वर्षे हर्षः प्रकर्षः स्यात्।

अधिकमास के दान को संकल्प

अधिक मास में नित्य अथवा पूर्वोक्त दिनन में पूवा ३३ अथवा पक्वान्न ३३ कांस्य के पात्र में धरिके दक्षिणा सहित देने, बने तो घृत सुवर्ण तथा वस्त्र हूं संग देने ताको संकल्प आचमन प्राणायाम करके करनो।

विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्याज्ञया प्रवर्त्तमान स्याद्य ब्रह्मणो द्वितीय परार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे सप्तमे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे भूर्लोके जम्बूद्वीपे भारतवर्षे आर्यावर्त्तान्तर्गत ब्रह्मावर्तैक देशे अमुक देशे बौद्धावतारे अशीतिः अधिकाद्विसहस्त्र संख्याके वैक्रमाब्दे नलनाम संवत्सरे (नर्मदा) के दक्षिण तीर सूं लेके पञ्चचत्वारिशत्युत्तर एकोन विंशतिशततमे शालिवाहन शाके शोभननाम संवत्सरे ऐसो कहनो।

वर्षाऋतौ अधिक श्रावणे पुरुषोत्तम मासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुक वासरान्वितायाममुकनक्षत्रे अमुक योगे अमुक करणे अमुकराशि स्थिते श्रीचन्द्रे कर्क राशि स्थिते श्रीसूर्ये मेष राशि स्थिते श्री देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथा राशि स्थान स्थितेषु सत्स्वेवं ग्रहगुण विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्यतिथौ मम वर्षत्रयोपार्जित कायिक, वाचिक, मानसिक सांसर्गिक समस्त पापक्षयार्थ पुराणोक्त शुभ फल प्राप्त्यर्थं श्रीगोपीजलवल्लभ प्रीत्यर्थमिमांस्त्रयस्त्रिंशद् विष्णवादि श्रीपत्यन्त त्रयस्त्रिंशद्देवतान् श्रीपुरुषोत्तम दैवतान् कांस्य पात्र स्थितान् सघृतान् सहिरण्यान् सवस्त्रान् सदक्षिणा कान् यथानामगोत्राय यस्मै कस्मैचिद् ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृज्ये तेन पुण्येन

भगवान् सर्वात्मा श्रीगोपीजनवल्लभः प्रीयताम्। अपूप के ठिकाने पक्वान्न होय तो 'अपूपस्थानापन्न पक्वानानि' ऐसो कहनो और घृत हिरण्यवस्त्रन में सूं न होय। ताके नाम को उच्चारण न करनो।

दान के श्लोक

विष्णुरूपी सहस्त्रांशुः सर्वपापप्रणाशनः।
अपूपान्नप्रदानेन मम पापं व्यपोहतु।।१।।
नारायण जगद्बीज भास्करप्रतिरूपधृक्।
दानेनाऽनेन पुत्रांश्च सम्पदं चाभिवर्द्धय।।२।।
यस्य हस्ते गदाचक्रे गरुडो यस्य वाहनः।
शंख करतले यस्य स मे विष्णुः प्रसीदतु।।३।।
कलाकष्ठादिरूपेण निमेषघटिकादिना।
यो वंचयति भूतानि तस्मै कालात्मने नमः।।४।।
कुरुक्षेत्रसमो देशः कालः पर्व द्विजो हरिः।
पृथ्वीसममिदं दानं गृहाण पुरुषोत्तम।।५।।
मलानां च विशुद्धयर्थं पापप्रशमनाय च।
पुत्रपौत्रभिवृद्धयर्थं तव दास्यामि भास्कर।।६।।

पूवा देने होय तो प्रथम श्लोक में अपूपान्न प्रदानेन है सो ही कहनो और पक्वान्न देने होय तो पक्वान्नानां प्रदानेन ऐसो कहनो पुरुषोत्तम मास के स्नान दानादि नियम नित्य न बन सके तो हूं वदि ११ शनिवार सूं ३० बुधवार पर्यन्त इन दिनन में अवश्य करनो चाहिये।

इति शुभम्।

श्राद्धपक्ष को निर्णय

भाद्रपद शुक्ल पक्ष १५, शुक्रवार से आश्विन शुक्ल पक्ष १, रविवार तक (दिनांक 29.09.2023 से 15.10.2023 तक)

तिथि	वार	दि.	श्राद्ध
भा.शु.१५ (पूर्णिमा)	शुक्र	29.09	प्रतिपदा (एकम्) को श्राद्ध
आ.कृ.१	शनि	30.09	द्वितीया (दूज) को श्राद्ध
आ.कृ.२	रवि	1.10	तृतीया (तीज) को श्राद्ध
आ.कृ.३	सोम	2.10	चतुर्थी (चौथ) को श्राद्ध एवं पिण्डरहित भरणी श्राद्ध
आ.कृ.५	मंगल	3.10	पंचमी (पाचम) को श्राद्ध
आ.कृ.६	बुध	4.10	षष्ठी (छठ) को श्राद्ध व व्यतीपात श्राद्ध
आ.कृ.७	गुरु	5.10	सप्तमी (सातम) को श्राद्ध
आ.कृ.७	शुक्र	6.10	अष्टमी (आठम) को श्राद्ध
आ.कृ.८	शनि	7.10	नवमी (नवम) को श्राद्ध व अविधवा नवमी
आ.कृ.९	रवि	8.10	दशमी (दशम) को श्राद्ध
आ.कृ.१०	सोम	9.10	एकादशी (ग्यारस) को श्राद्ध
आ.कृ.११	मंगल	10.10	मघा श्राद्ध
आ.कृ.१२	बुध	11.10	द्वादशी (बारस) को श्राद्ध व सन्यासीन को श्राद्ध
आ.कृ.१३	गुरु	12.10	त्रयोदशी (तेरस) को श्राद्ध
आ.कृ.१४	शुक्र	13.10	चतुर्दशी (चौदस) निमित्तक घायलन को श्राद्ध, जल शस्त्र आदि सूं मरण पायो होय उनके ही या दिन श्राद्ध
आ.कृ.३०	शनि	14.10	अमावस तथा सर्वपितृ को श्राद्ध
आ.शु.१	रवि	15.10	मातामह श्राद्ध

विशेष : 1. जाकी मरण तिथि चतुर्दशी अथवा पूर्णिमा होय ताको महालय श्राद्ध अष्टमी, द्वादशी, अमावस्या, व्यतीपात या में सूं कोई भी दिन करनो प्रशस्त है।

2. षष्ठी बुध कूं व्यतीपात योग होय वे सूं यह दिवस श्राद्धादिक में विशेष प्रशस्त है। कोई भी तिथि को श्राद्ध रहि गयो होय या रही जायवे को सम्भव होय तो ताको श्राद्ध या दिवस करनो।

।। इति श्राद्धपक्ष निर्णय समाप्त ।।

श्राद्धपक्ष को संकल्प

ॐ विष्णु: 3 श्रीमद् भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रर्वत्तमान स्याद्य ब्रह्मणो द्वितीयपरार्धे श्री श्वेतवाराह कल्पे वैवस्वत मन्वन्तरेऽष्टा विंशति तमे कलियुगे कलि प्रथम चरणे भूर्लोके जंबूद्वीपे भारतवर्षे आर्यावर्तान्तर्गते ब्रह्मावर्तैक देशे अमुक देशे बौद्धावतारे नलनाम्नि अशीति: अधिक द्विसहस्त्र संख्या के वैक्रमाब्दे शकानुसारेण शोभन नाम संवत्सरे शरद ऋतौ आश्विन मासे (गुर्जर भाद्रपद मासे) कृष्णपक्षे अमुक तिथौ वासरान्वितायां नक्षत्र, योगे, करणे अमुक राशि स्थिते चन्द्रे, कन्या राशि स्थिते श्रीसूर्ये मेष राशि स्थिते श्री देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथा राशि स्थान स्थितेषु सत्वेवं ग्रह गुण विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्यतिथौ मम (नाम सम्बन्धोच्चारण) एतेषां यथानाम् गोत्र रूपाणां पुरुष विषये सपत्नीकानां स्त्रीविषये सभर्तृक सपत्न्याम् विधिना महालयापर पक्ष श्राद्धमथवा सकृन्महालया पर पक्ष श्राद्ध सदैव सद्य: करिष्ये।

।। इति श्राद्धपक्ष निर्णय समाप्त ।।

खण्डग्रास चन्द्रग्रहण

संवत् २०८० शकः १९४५ आश्विन शुक्ल पूर्णिमा, शनिवार, दिनांक २९ अक्टूबर सन् २०२३ भारतवर्ष में खण्डग्रास चन्द्रग्रहण दिखाई देगो। नाथद्वारा में या दिन दिनमान २८ घटी १२ पल सूर्योदय स्टे.टा. ६ बजके ४० मिनिट सूर्यास्त ५ बजके ५६ मिनिट पर होयगो। ग्रहण को स्पर्श नाथद्वारा में रात्रि के १ बजके ५ मिनिट पर मध्य १ बजके ४५ मिनिट, मोक्ष २ बजके २३ मिनिट पर्वकाल १ घण्टा १८ मिनिट को होयगो। शनिवार दिन के ३ बजके ७ मिनिट सूं ही वेध लगे है। तासूं दिन के ३ बजके ७ पूर्व ही भोजन (प्रसाद) लियो जायगो। शनिवार रात्रि कूं ९ बजके २९ मिनिट सूं पूर्व ही जल पियो जायेगो। बिना जनेऊ के बालक तथा छोटी कन्या, वृद्ध, अशक्त रात्रि कूं ९ बजके २९ मिनिट सूं पूर्व प्रसाद ले सकेंगे। १५ शनिवार के दिन १२ बजके ३० मिनिट सूं पूर्व राजभोग हो जाय ऐसो सेवा क्रम राखनो। उत्थापन के शंखनाद भी ऐसे समय पर करने ताकि सायं ६ बजे सूं पूर्व ही शयन की सेवा हो जाय। शयन की सखड़ी सब गायन कूं जाय। सेवा में सुपेदी सब कोरी राखनी, रसोई, बालभोग आदि स्थल तथा पात्रन की शुद्धि ग्रहण में जैसी होती होय, वैसी करनी। सर्वत्र दर्भ धरनो। श्री कूं रात्रि के १२ बजके ३० मिनिट के सुमार ग्रहण निमित्तक जगावने। रीति प्रमाणे सूको मेवा प्रभृति धरनो। या ग्रहण को पर्वकाल १ घंटा १८ मिनिट होयवे तथा मंगल भोग मोक्ष पश्चात् धरवे सूं ग्रहण लगने सूं पूर्व प्रभु कूं दूधधर को अधकी भोग तथा दूध को डबरा अरोगानो भी प्रशस्त है। स्पर्श सूं चारेक मिनिट पूर्व दूध घर को भोग उठाय झारी बंटा हूं पट्ट वस्त्र सूं उठावने। स्पर्श समय दर्शन खोलिके जपादिक करने शनिवार की रात्रि के १ बजके ४५ मिनिट के पीछे श्री के आगे दान को संकल्प करनो। खिचड़ी को डबरा घृत दक्षिणा सहित प्रायः सर्वत्र दियो जाय है। प्रत्यक्ष अथवा निष्क्रय द्वारा गोदान जहां जैसा हो तो होय तहां वैसो कियो जाय। मनुष्य भी यथाशक्ति दानादि अवश्य करें। मोक्ष भये पीछे चार पाँच मिनिट ठहरके स्नानादि करने शुद्ध होय। नवीन जल सूं झारी भरनी। श्री कूं स्नान करवाय के ग्रहण पीछे को अन सखड़ी भोग तथा मंगल भोग संग ही धरनो। नित्य प्रमाणे राजभोग पर्यन्त की सेवा करनी अनवसर कर यथाशक्ति ब्राह्मण भोजन, वैष्णव भोजन पूर्वक प्रसाद लेनो।

यह ग्रहण - मिथुन, कर्क, वृश्चिक, कुम्भ राशि वारेन कूं शुभ

सिंह, तुला, धनु, मीन राशि वारेन कूं मध्यम

मेष, वृषभ, कन्या, मकर राशि वारेन कूं अशुभ

जिनको जन्म नक्षत्र अश्विनी होय उनकूं अति अनिष्ट। जिनकूं ग्रहण अनिष्ट होय उनकूं एक कांस्य के पात्र में तातो पतरो घृत भरिके सुवर्ण को नाग तथा चन्द्र बिम्ब धरिके वा ताते पतरे घृत में मुख देखिके दक्षिणा सहित दान करनो। ताको मन्त्र -

तमोमय महाभीम सोमसूर्य विमर्दन।
हेमतार प्रदानेन मम शान्ति प्रदो भव।।१।।

विधुन्तुद नमस्तुभ्यं सिंहिका नन्दनाऽच्युता।
दानेनानेन नागस्य रक्ष मां वेधजाद् भयात्।।२।।

स्टे.टा.	स्पर्श	मध्य	मोक्ष	पर्वकाल
घन्टा	१	१	२	१
मिनिट	५	४५	२३	१८

गणितकर्ता - **त्रिपाठी राजेश्वर यदुनन्दन जी शास्त्री, मो. 9414473016**

वर्त्तमान गोस्वामि बालकन के जन्म दिन की गुर्जरमासानुसार सूचना

श्री नाथद्वारा	
फा.शु.७	गोस्वामि तिलकायित श्री १०८ **श्री इन्द्रदमनजी (श्री राकेशजी) महाराज,** श्री इन्द्रदमनजी (श्री राकेशजी) के लालजी १
मार्ग.कृ.३०	चि.गो.श्री भूपेशकुमारजी **(श्री विशाल बावा),** चि.गो. श्री विशाल बावा के लालजी १
फा.कृ.७	गो.चि. लाल गोविन्दजी **(श्री अधिराज बावा)**
आ.कृ.१३	गो. कल्याणराय जी गो. कल्याणराय जी के लालजी २
पौ.कृ.६	चि. श्रीहरिरायजी
अश्वि.शु.६	चि. श्रीवागधीशजी
माघ शु.१३	चि.हरिरायजी के लालजी २
फा.शु.३	चि.श्री वदान्य राय जी चि. द्विजराज जी
पौष शु.५	गो. श्री गोकुलोत्सव जी श्री गोकुलोत्सव जी के लालजी १
फा.शु.४	चि. श्री व्रजोत्सवजी चि. व्रजोत्सव जी के लालजी १
वै.शु.१२	चि. व्रजेश्वरजी
वै.कृ.४	गो. दिव्येशजी
	गो. श्री दिव्येश जी के लाल जी २
चै.शु.१४	चि. श्री प्रिय व्रजराय जी
का.शु.१०	चि. श्री अनुश्रुत जी
कांकरोली	
पौ.शु.१०	गो. श्रीवृजेशकुमारजी
चै.कृ.४	गो. पीताम्बरजी
वै.कृ.६	गो. त्रिलोकीभूषणजी
	श्री व्रजेशकुमारजी के लालजी २
ज्ये.शु.५	चि.पुरूषोत्तमजी
का.व.४	चि. द्वारकेशजी
	श्री पीताम्बरजी के लालजी १
ज्ये.शु.१४	चि. व्रजालंकारजी
	गो. त्रिलोकीभूषणजी के लालजी १

वै.कृ.१३	गो. चि. व्रजाभरणजी
	श्री पुरूषोत्तमजी के लालजी २
का.कृ.६	गो. श्रीव्रजभूषणजी
का.शु.१०	गो. चि. श्रीविट्ठलनाथजी
	श्री द्वारकेश जी के लालजी २
मा.व.१२	चि. आश्रयकुमार जी
ज्ये.सु.८	चि. शरणकुमार जी
	चि. आश्रयकुमार जी के लालजी १
का.कृ.४	चि. यदुराजजी
	चि. व्रजाभरण जी के लालजी १
भा.शु.२	चि.रणछोड़ राय जी
आ.सु.६	गो. रविकुमारजी गो. रविकुमारजी के लालजी २
श्रा.सु.३०	चि. अवतंस बावा
माघ व.४	चि. प्रियम बावा
पौ.सु.६	गो. संजीव कुमार जी गो. संजीव कुमार जी के लालजी १
मार्ग.कृ.४	चि. विट्ठलनाथजी

जतीपुरा

वै.कृ.६	गो. लालमणीजी लालमणीजी के लालजी २
श्रा.शु.६	चि. गो. मिलनकुमारजी
चै.शु.६	चि. द्वारकेशलालजी
	श्री मिलनकुमारजी के लालजी १
श्रा.कृ.२	चि. कृष्णास्य बावा

कोटा-कड़ी

भा.कृ.६	चि. व्रजेशकुमारजी
माघ.व.१०	गो. चि. घनश्यामलालजी
आसो.सु.१०	गो. दामोदरलालजी
चै.व.१२	गो. चि. वल्लभलालजी गो. वल्लभलालजी के लालजी १
आषा.सु.८	चि. पुरूषोत्तमजी
	घनश्यामलालजी के लालजी २
फा.शु.७	गो.चि. कृष्णकुमारजी गो.चि. कृष्णकुमारजी के लालजी १
पौ.व.११	गो.चि. व्रजपाललालजी

फा.शु.११	चि. कुंजेशकुमारजी गो. चि. कुंजेशकुमारजी के लालजी २
मार्ग.व.२	गो.चि. गोविन्दरायजी
आश्वि.व.३	गो.चि. गोकुलमणीजी
आसो.व.३	गो. विनयकुमारजी
आषा.व.४	गो. शरदकुमारजी गो. शरदकुमारजी के लालजी १
चै.शु.१४	चि. पुलकित बाबा
श्रा.सु.७	गो. त्रिलोकीभूषणजी त्रिलोकीभूषणजी के लालजी १
ज्ये.कृ.१	राजीवलोचनजी
	व्रजेशकुमारजी के लालजी ३
चै.शु.६	चि यदुनाथजी चि. यदुनाथजी के लालजी १
पौ.कृ.५	चि. प्रद्युम्नजी
कार्ति.सु.१०	चि. द्वारकेशजी
कार्ति.सु.७	चि. जयदेवजी चि. जयदेवजी के लालजी १

मार्ग कृ.१३	चि. व्रजराजजी
	चि. दामोदरलालजी के लालजी २
श्रा.व.१२	चि. हरिरायजी
	चि. हरिरायजी के लालजी १
माघ कृ.१३	चि. गोकुलेश्वरजी
ज्ये.व.१०	चि. दर्शन कुमारजी
	चि. दर्शनकुमार जी के लालजी २
ज्ये.व.४	चि. व्रजाधीशजी
मा.कृ.७	चि. व्रजाधीपजी

कामवन

फा.सु.२	गो. श्री वल्लभलालजी गो. श्री वल्लभलालजी के लालजी २
भा.कृ.२	चि. श्री देवकीनंदनजी
श्रा.कृ.१०	चि. श्री विट्ठलनाथजी

कामवन/सूरत

आ.कृ.१४	गो. श्री द्वारकेशलालजी गो.श्रीद्वारकेशलालजी के लालजी २
फा.शु.३	चि. श्री अनिरुद्धलालजी

श्रा.कृ.१३	चि. श्री कन्हैयालालजी
	चि. श्री अनिरुद्धलालजी के लालजी २
भा.कृ.४	चि. श्री गोविन्दजी
का.शु.७	चि. श्री गोकुलचन्द्र जी
	चि. श्री कन्हैयालालजी के लालजी १
का.शु.१०	चि. श्री जयदेवजी

कामवन/भावनगर

भा.शु.१	गो. श्री नवनीतलालजी
	गो. श्री नवनीतलालजी के लालजी १
का.शु.१	चि. श्री गोकुलेशजी

कामवन/घाटकोपर

का.कृ.११	गो. मुरलीधर जी गो. मुरलीधरलालजी के लालजी १
मार्ग.शु.४	चि. श्री जयदेवलालजी
चै.कृ.१३	गो. श्री रघुनाथलालजी गो. श्री रघुनाथलालजी के लालजी २
मार्ग.शु.६	चि. श्री गिरधरजी
श्रा.कृ.५	चि. श्री दामोदर जी,

कामवन

आष.सु.११	गो. ब्रजेशकुमारजी
	गो. ब्रजेशकुमारजी के लालजी १
श्रा.व.३	गो. चि. अनिरूद्धजी चि. अनिरूद्धजी के लाल जी १
फा.कृ.६	चि. रमणजी (रसेश जी)
श्रा.व.३	गो. गोपाललालजी
आसो.व.१२	गो. कल्याणरायजी
चै.सु.१५	गो. रघुनाथलालजी (गोकुल-मुम्बई)
	गो. रघुनाथजी के लालजी १
माघ सु.४	चि. योगेशकुमारजी चि. योगेशकुमारजी के लालजी २
आ.व.१३	चि. श्रीव्रजोत्सवजी

श्रा.कृ.३०	चि. व्रजपालजी
भा.सु.१४	गो. शिशिरकुमारजी
	गो. चि. गोपालजी के लालजी १
आसो.व.४	चि. लालजी
	गो.चि.कल्याणरायजी के लालजी १
भा.व.१	गो. चि. उपेन्द्रजी गो. चि. उपेन्द्रजी के लालजी २
का.कृ.५	चि. वल्लभलालजी
का.कृ.५	चि. घनश्यामलालजी

गोकुल

का.व.१०	गो. देवकीनन्दनजी गो. देवकीनन्दन के लालजी २
मा.व.३०	चि. वल्लभलालजी
का.सु.२	चि. विट्ठलनाथजी

वीरमगाम

आसो.व.१४	गो. रघुनाथ जी
आसो.व.६	गो. ब्रजेशकुमारजी गो. ब्रजेशकुमार जी के लालजी १
माघ व.६	चि. रसिकप्रितमजी
श्रा.व.११	गो. कन्हैयालाल जी गो. कन्हैयालालजी के लालजी १
श्रा.व.८	चि. श्रीगोकुलेशजी

सूरत

मार्ग.सु.११	गो. वल्लभलालजी
आषा.व.४	गो. गोपेश्वरजी
पौ.व.३	गो. मुकुन्दरायजी
	गो. वल्लभलालजी के लालजी १
आसो.व.१	चि. अनुरागजी
	गो. गोपेश्वरजी के लालजी १
फा.व.६	चि. वत्सलराजजी
	चि. अनुरागरायजी के लालजी १
आसो.व.७	चि. पुरूषोत्तमरायजी
	गो. मुकुन्दराय जी के लालजी १
आसो.कृ.१२	चि. पीताम्बर रायजी

बड़ोदरा, सूरत

चै.सु.११	गो. मथुरेशजी
पौ.व.५	गो. प्रभुजी
	गो. मथुरेशजी के लालजी २
भा.सु.६	चि. योगेशकुमारजी
भा.व.२	चि. द्रुमिलकुमारजी
	गो. द्रुमिलकुमारजी के लालजी १
	चि. व्रजराजकुमारजी

चापासेनी-जामनगर-नडियाद

ज्ये.सु.५	गो. हरिरायजी
फा.व.१४	गो. व्रजरत्नजी
पौष सु.६	गो. नवनीतरायजी
आषा.सु.८	गो. बालकृष्णजी
आषा.सु.१५	गो. मुकुट बावा
फा.व.१२	गो. शरदकुमारजी
फा.सु.१५	गो. उत्सवजी
आश्वि.शु.६	गो. पुरुषोत्तमलालजी
का.शु.४	गो. गोपेशरायजी
	चि. हरिरायजी के लालजी १
का.व.१२	चि. व्रजवल्लभजी
	गो. व्रजरत्नजी के लालजी १
अश्वि.सु.७	चि. गोकुलोत्सवजी
	गो. नवनीतलालजी के लालजी १
ज्ये.सु.१०	चि. अंजनरायजी
	बालकृष्णजी के लालजी १
पौ.सु.१	चि. प्रियांकजी

मथुरा

पौ.व.६	गो. प्राणवल्लभजी गो. प्राणवल्लभलालजी के लालजी २
का.शु.११	चि. व्रजवल्लभजी
चै.व.११	चि. जयवल्लभ जी
	चि. व्रजवल्लभजी के लालजी १
वै.कृ.११	चि. कृतार्थ बावा
भा.सु.५	गो. रसिकवल्लभजी

	गो. रसिकवल्लभ जी के लालजी २
मा.शु.५	चि. समर्पण बावा
आ.सु.६	चि. प्रागट्य कुमार जी
का.सु.६	गो. अक्षयकुमारजी
आषा.सु.१४	गो. शरदकुमारजी गो. शरदकुमारजी के लालजी ३
माघ व.६	चि. गोपाललालजी
	चि. गोपाललालजी के लालजी १
फा.कृ.१२	चि. अक्षतकुमारजी
का.सु.५	चि. व्रजभूषणलालजी
	चि. ब्रजभूषणलालजी के लालजी १
आश्वि.शु.४	चि. ऋषभकुमारजी
ज्ये.सु.११	गो. प्रबोधकुमारजी
	गो. प्रबोधकुमारजी के लालजी २
भा.सु.८	चि. अभिषेककुमारजी
	चि. अभिषेककुमारजी के लालजी १
आषा.कृ.१३	चि. रक्षितकुमारजी
भा.सु.४	चि. रत्नेशकुमारजी
	चि. रत्नेशकुमारजी के लालजी १
वै.शु.२	चि. यदुनाथजी
मार्ग.व.२	गो. संदीपकुमारजी
	गो. अक्षयकुमारजी के लालजी ३
आसो.सु.१	चि. प्रणयकुमारजी
	प्रणयकुमारजी के लालजी २
फा.शु.१२	गो.चि. श्रीअलंकारजी
फा.शु.७	गो.चि. वृजरायजी
पौ.व.६	चि. परितोषकुमारजी

मार्ग.व.८	चि. पंकजकुमारजी

वाराणसी

मार्ग.सु.२	श्याम मनोहरजी
	गो. श्याममनोहरजी के लालजी १
मार्ग.कृ.६	गो. चि. प्रियेन्दु बावा,
	गो. चि. प्रियेन्दु बावा के लालजी २
मार्ग.कृ.१३	चि. परिवृढ़ बावा
माघ.कृ.१०	श्री श्रृंगार बाबा

अहमदाबाद

का.सु.१२	चि. व्रजेन्द्रकुमारजी
	गो. व्रजेन्द्रकुमारजी के लालजी २
आसो.व.१०	चि. तिलक बावा
आश्वि.शु.१	गो.चि. आभरण बावा
	गो.चि. तिलक बावा के लालजी २
ज्ये.सु.२	गो. चि. निवेदन बावा
आ.व.१०	गो.चि. आभुषणजी बावा

मुम्बई

आ.सु.५	गो. मनमथरायजी
मार्ग.व.६	गो. नीरजकुमारजी
	गो. नीरजकुमारजी के लालजी १
वै.व.१४	चि. गोविन्दरायजी
का.व.१३	गो. रमेशचन्द्रजी
माघ सु.६	गो. रमेशचन्द्रजी के लालजी १
माघ व.६	चि. रघुनाथजी
	चि. रघुनाथजी के लालजी २
भा.सु.५	चि. गोपीनाथजी दिक्षीत
मार्ग.सु.२	चि. नागरमोहनजी

माघ व.६	गो. यदुनाथजी
फा.सु.१५	गो. गोकुलनाथजी
	गो. कृष्णजीवनजी के लालजी ५
पौ.व.४	गो. मधूसुदन जी
आषा.सु.२	गो. कृष्णकान्तजी
	चि. कृष्णकान्त जी के लालजी १
श्रा.शु.११	चि. गिरिधरलालजी
मार्ग.सु.४	गो. गोकुलनाथजी
माघ.सु.६	गो. घनश्यामलालजी
	गो. घनश्यामलाल जी के लालजी १
भा.कृ.८	चि. वृजानंदलालजी
आषा.सु.११	गो. ललितत्रिभंगीजी
	गो. ललितत्रिभंगीजी के लालजी १
फा.सु.८	चि. व्रजवल्लभलालजी
मार्ग.व.४	गो. हृषीकेशजी
	गो. हृषीकेशजी के लालजी २
आसो.सु.१	गो. राजीवलोचनजी
वै.सु.७	रविरायजी
वै.व.४	गो. योगेशकुमारजी
	गो. योगेशकुमारजी के लालजी १
भा.व.३०	चि. बालकृष्णलालजी
का.व.४	गो. कमलेशकुमारजी गो. कमलेशकुमारजी के लालजी १
फा.व.६	चि. मुकुन्दरायजी
आसो.सु.१	गो. मनमोहनजी
आषा.व.३०	गो. हिरण्यगर्भजी गो. हिरण्यगर्भजी के लालजी १
आ.कृ.११	चि. हैयंगवीनजी
	गो. मधुदसूदनजी के लालजी २

चै.सु.१०	चि. कृष्णचन्द्रजी
पौ.व.५	चि. वल्लभदीक्षितजी
आसो.सु.११	गो. गोपिकालंकारजी
	गो. गोपिकालंकारजी के लालजी २
मा.व.१०	चि. गो. श्री भक्तवत्सल बावा
फा.व.२	चि. गो. श्री तिलकराय बावा

कान्दीवली-मुम्बई

ज्ये.सु.२	गो. द्वारकेशलालजी
कार्ति.सु.७	गो. पुरूषोत्तमजी
	गो. पुरूषोत्तमजी के लालजी १
आसो.व.२	गो. श्री विट्ठलराय जी

मुम्बई विलेपार्ले

आसो.सु.३	गो. रसिकवल्लभजी
चै.सु.६	गो. महेन्द्रकुमारजी
	गो. रसिकवल्लभजी के लालजी १
आसो.सु.१३	चि. शिशिरकुमारजी
	चि. शिशिरकुमारजी के लालजी १
पौ.कृ.५	चि. मुरलीमनोहरजी

मुम्बई-वेरावल-पोरबन्दर

माघ सु.८	गो. माधवरायजी
मार्ग.सु.६	गो. चन्द्रगोपालजी
	गो. चन्द्रगोपालजी के लालजी १
श्रा.कृ.६	चि. अनिरूद्धलालजी चि. अनिरूद्धलालजी के लालजी १
भा.सु.७	चि. स्वानन्द बावा
आसो.व.१४	गो. शैलेशकुमारजी
	श्री शैलेशकुमारजी के लालजी १
श्रा.सु.३	चि. लाडिलेशजी चि. लाडिलेशजी के लालजी १
चै.कृ.१३	चि. अविचलरायजी
	गो. माधवरायजी के लालजी १
आषा.व.४	चि. मुरलीधरजी

बोरीवली-जामखंभालिया

श्रा.व.१३	गो. राकेशकुमारजी
	गो. मुरलीधरजी के लालजी ३
का.व.१३	गो. त्रिभंगीलालजी
चै.व.११	गो. व्रजप्रियजी
माघ व.१०	गो. व्रजनाथलालजी
	गो. व्रजनाथलालजी के लालजी १
श्रा.सु.७	चि. ध्येयरायजी
वै.सु.१३	गो. राजीवलोचनजी
मार्ग.सु.२	गो. गोविन्दरायजी
	गो. गोविन्दरायजी के लालजी १
श्रा.सु.२	चि. रूचिरबाबा
ज्ये.सु.१५	गो. गोपिकालंकारजी
	गो. गोपिकालंकारजी के लालजी १
फा.सु.२	चि. गो. द्वारकेशलालजी
	गो. राजीवलोचनजी के लालजी ३
आषा.व.५	चि. देवकीनन्दनजी
	चि. देवकीनन्दनजी के लालजी १
चै.व.११	चि. गो. वेदांग बावा
ज्ये.सु.४	चि. कुंजरायजी
श्रा.कृ.३	चि. गो. गिरिधरजी
	गो. त्रिभंगीलालजी के लालजी १
का.सु.३	चि. यमुनेशकुमारजी

जूनागढ

श्रा.व.३	गो. दानीरायजी
	गो. दानीरायजी के लालजी ४

का.सु.५	चि. पुरूषोत्तमजी
आषा.सु.११	गो. व्रजेन्द्रकुमारजी
	चि. व्रजेन्द्रकुमार जी के लालजी ३
भा.व.१	चि. ब्रजनाथजी
आश्वि.व.१३	चि. मधुरेशजी
चै.शु.६	चि. कृष्णराय जी
का.शु.१५	चि. विशालकुमारजी

पूना-मद्रास

चै.सु.४	गो. अजयकुमार जी
	गो. अजयकुमार जी के लालजी १
भा.कृ.६	चि. वागधीशकुमारजी
फा.व.११	गो. भरतकुमारजी
	गो. भरतकुमारजी के लालजी १
वै.व.२	चि. यशोवर्द्धन जी

मांडवी, गोकुल, जूनागढ़, बम्बई, राजकोट, बड़ोदरा

वै.सु.१४	गो. रणछोड़लालजी
माघ व.६	गो. अनिरूद्धलालजी
	गो. अनिरूद्धजी के लालजी १
वै.सु.१४	चि. रसिकरायजी
	चि. रसिकरायजी के लालजी १
श्रा.कृ.७	चि. अचिन्त्य जी
आ.कृ.६	गो. चन्द्रगोपालजी
का.सु.४	गो. भूषणजी
	गो. चन्द्रगोपालजी के लालजी २
का.सु.१२	चि. अन्वयजी
श्रा.सु.५	चि. प्रत्यय जी
	गो. भूषणजी के लालजी २

फा.कृ.३	चि. अव्ययजी
का.सु.८	चि. गोपालजी
का.व.४	गो. व्रजेन्द्रजी
	गो. व्रजेन्द्रजी के लालजी २
का.कृ.२	चि. ब्रजवल्लभजी
पौ.कृ.७	चि. पुण्यश्लोकजी
आश्वि.कृ.७	गो. श्री सांरगजी (बडोदरा)
	गो. श्री सारंगजी के लालजी १
फा.सु.१४	चि. उत्सव बावा

पोरबन्दर

वै.सु.७	गो. हरिरायजी हरिरायजी के लालजी १
मा.शु.११	चि. जयगोपालजी
	चि. जयगोपालजी के लालजी १
आश्वि.कृ.१	चि.भावनेशरायजी

मथुरा-पोरबन्दर

मार्ग.व.१०	गो. रसिकरायजी
पौ.कृ.८	श्री श्याम मनोहर जी
	गो.रसिकरायजी के लालजी २
वै.व.१०	चि. चन्द्रगोपालजी
माघ व.१२	गो. वसन्तकुमारजी
का.सु.६	गो. विशालकुमारजी
	गो. वसन्तकुमारजी के लालजी १
भा.व.१२	चि. श्रीकृष्णरायजी
फा.कृ.५	गो. अभिषेककुमारजी
	गो. अभिषेककुमारजी के लालजी १
चै.कृ.११	चि. द्वारकेशलालजी
वै.शु.३	गो. अक्षयकुमारजी
	गो. अक्षयकुमारजी के लालजी १
का.शु.६	चि.रमणेशजी
	गो. चन्द्रगोपालजी के लालजी १
आषा.सु.७	चि. मिलनकुमारजी
	चि. मिलनकुमारजी के लालजी ३
मार्ग.शु.८	चि. गोकुलनाथजी
आश्वि.कृ.६	चि. विट्ठलेशरायजी
आश्वि.शु.११	चि. मथुरेशजी

लीलास्थ गोस्वामि बालकन के उत्सव की गुर्जरमासानुसार सूचना

''श्रावण''

व.१	श्री गोवर्द्धनलालजी	नाथद्वारा
व.७	श्री रणछोड़लालजी	बम्बई
व.८	श्री कन्हैयालालजी	गोकुल
व.६	श्री कृष्णजीवनजी	चैन्नई
व.१२	श्री प्रद्युम्नलालजी	वेटद्वार
व.१४	श्री गोपाललालजी	कांकरोली
व.३०	श्री कन्हैयालालजी	बम्बई
सु.२	श्री वल्लभलालजी	बम्बई
सु.११	श्री गिरधारीलालजी	मुम्बई
सु.१२	श्री विट्ठलेशरायजी	चापासेनी
सु.१२	श्री गोकुलेशजी	जूनागढ़

''भाद्रपद''

सु.४	श्री पुरूषोत्तमलालजी	चापासेनी
सु.७	श्री व्रजरत्नलालजी	सूरत
सु.८	गो. व्रजजीवनजी	कान्दीवली मुम्बई
सु.६	श्री पुरूषोत्तमलालजी	चापासेनी
सु.१०	श्री दामोदरलालजी	बम्बई
सु.११	श्री व्रजवल्लभजी	जूनागढ
सु.१२	श्री गोकुलनाथजी	बम्बई
सु.१२	श्री अनिरूद्धलालजी	नडियाद
सु.१३	श्री पुरूषोत्तमलालजी	कोटा
व.१	श्री मदनमोहनजी	मुम्बई
व.३	श्री गोवर्द्धनलालजी	बम्बई
व.३	श्री दामोदरलालजी	मथुरा
व.४	श्री चन्द्रगोपालरायजी	बडौदरा सूरत

व.७	श्री वल्लभलालजी	बड़ौदा
व.७	श्री घनश्यामलालजी	सूरत
व.८	श्री मुरलीधरजी	कोटा
व.८	श्री मुरलीधरजी	बेटद्वार
व.१०	श्री व्रजनाथजी	विलेपार्ले
व.११	श्री नृसिंहलाल जी	शेरगढ़
व.१२	श्री गोविन्दरायजी	कोटा

''आश्विन''

सु.७	श्री हरिरायजी	मुम्बई
सु.११	श्री कृष्णकुमारजी	कामवन
व.३	श्री घनश्यामलालजी	मुम्बई
व.५	श्री व्रजनाथजी	जामनगर
व.६	श्री मगनलालजी	सूरत
व.१०	श्री व्रजरायजी श्री नटवरगोपालजी	अहमदाबाद

व.१०	श्री कन्हैयालालजी	मथुरा, पोरबंदर
व.१३	श्री व्रजपाललालजी	मथुरा
व.१४	श्री. जयदेवलाल जी	वीरगाम
व.१४	श्री प्रियव्रतरायजी	मुम्बई

''कार्त्तिक''

सु.१	श्री गोवर्द्धनेशजी	बम्बई
सु.१	श्री रमणलालजी	मथुरा
सु.३	श्री प्रदीपकुमारजी	मथुरा
सु.४	श्री मधुसूदनलालजी	अमरेली
सु.६	श्री पुरूषोत्तमलालजी	अमरेली
सु.७	श्री लालमणिजी	कोटा
सु.७	श्री जीवनेशजी	मुम्बई
सु.८	श्री गोपाललालजी	मथुरा
सु.१०	श्री गोकुलाधीशजी	बम्बई
सु.११	श्री श्यामसुन्दरजी	बम्बई

सु.१३	श्री गोविन्दरायजी	कामवन
सु.१४	श्री जीवनलालजी	कोटा
सु.१५	श्री गिरधरलालजी	काशी
व.२	श्री पुरूषोत्तमलालजी	जूना
व.७	श्री गोविन्दलालजी	नाथद्वारा
व.८	श्री राजेन्द्रकुमारजी	मथुरा
व.१०	श्री उत्तमश्लोकजी	मुम्बई
व.१४	श्री जयदेवजी	वीरमगाम

''मार्गशीर्ष''

सु.१३	श्री गिरधरलालजी	नाथद्वारा
सु.१४	श्री द्वारकेशलालजी	मांडवी
व.१	श्री दाऊजी (राजीवजी)	नाथद्वारा
व.३	श्री विट्ठलनाथजी	चापासेनी
व.३०	श्री गोविन्दरायजी	पोरबंदर

'पौष''

सु.४	श्री गोकुलनाथजी	वेरावल
सु.५	श्री गोपेश्वरलालजी	नाथद्वारा
सु.६	श्री दामोदरलालजी	नाथद्वारा
सु.७	श्री रणछोड़लालजी	कोटा
सु.१०	श्री कल्याणरायजी	बम्बई
सु.१२	श्री विट्ठलनाथजी	बम्बई
सु.१३	श्री वल्लभलालजी	बोरी., जाम.
व.६	श्री वल्लभलालजी	बम्बई
व.६	श्री विट्ठलनाथजी	मथुरा
व.११	श्री रणछोड़लालाजी	राजकोट
व.१२	श्री व्रजभूषणलालजी	नड़ियाद

''माघ''

सु.४	श्री कृष्णकुमारजी	मथुरा
सु.६	श्री अनिरूद्धलालजी	मुम्बई
सु.१३	श्री घनश्यामजी	कामवन
व.२	श्री व्रजभूषणलालजी	कांकरोली
व.२	श्री नटवरलालजी	मांडवी
व.४	श्री नृत्यगोपालजी	मुम्बई
व.५	श्री कल्याणरायजी	सूरत

''फाल्गुन''

सु.३	श्री गिरधरजी	सूरत
सु.४	श्री गोकुलनाथजी	गोकुल
सु.८	श्री रमणजी	कामवन
सु.११	श्री गोविन्दरायजी	सूरत
सु.१२	श्री काकागिरधरजी	नाथद्वारा
सु.१३	श्री मुरलीमनोहरजी	मुम्बई
सु.१४	श्री मधुसुदनलालजी	सूरत
सु.१५	श्री माधवरायजी	पोरबंदर
व.५	श्री चिम्मनलाल जी	बम्बई
व.१३	श्री व्रजरायजी	अहमदाबाद
व.१३	श्री गोकुलनाथजी	माण्डवी-कच्छ
व.३०	श्री कृष्णचन्द्रजी	मुम्बई

''चैत्र''

सु.१०	श्री गोपाललालजी	कोटा-कड़ी
सु.१३	श्री मुरलीधरजी	काशी
सु.१४	श्री पुरुषोतमजी	मुम्बई
सु.१५	श्री मुरलीधरलालजी	बोरीवली
व.१४	गो.यशोदानन्दनजी	बोरीवली

''वैशाख''

सु.३	श्री देवकीनन्दनजी	कामवन
सु.६	श्री किशोरचन्द्रजी	जूनागढ़
सु.६	श्री यदुनाथजी	मथुरा
सु.१०	श्री मुरलीमनोहरजी	बडोदरा
सु.११	श्री यदुनाथरायजी	जतीपुरा
सु.१५	श्री माधवरायजी	मुम्बई
व.१	श्रीद्वारकेशजी	पोरबन्दर
व.५	श्री रणछोड़लालजी	कोटा
व.७	श्री शरदकुमारजी	मथुरा, पोरबंदर
व.११	श्री देवकीनन्दनजी	इन्दौर
व.१२	श्री दीक्षितजी	बम्बई
व.१४	श्री व्रजाधीशजी	मुम्बई
व.१४	श्री विट्ठलेशरायजी	पोरबंदर
व.३०	श्री वागीशरणजी	बम्बई

''ज्येष्ठ''		
सु.१	गो. मथुरेशजी	वीरगाम
सु.४	श्री त्रिविक्रमरायजी	कोटा
सु.५	श्री जीवनजी	बम्बई
सु.८	श्री मुकुन्दरायजी	राजकोट
सु.९	श्री गिरधरजी	कोटा
सु.११	श्री कल्याणरायजी	मथुरा
सु.१२	श्री द्वारकेशलालजी	कोटा
सु.१३	श्री जीवनलालजी	पोरबंदर
सु.१४	श्री द्वारकेशलालजी	बम्बई
सु.१५	श्री जीवनलालजी	काशी
व.४	श्री गिरधरलालजी	कामवन
व.८	श्री घनश्यामलालजी	मांडवी
व.१२	श्री ब्रजरमणलालजी	मथुरा
व.१४	श्री वागधीशजी	अमरेली
''आषाढ़''		
सु.२	श्री मगनलालजी	वेरावल
सु.२	श्री गोपाललालजी	कामवन
सु.३	श्री गोपालालजी	कांकरोली
सु.३	श्री मथुरेशजी	मुम्बई
सु.३	श्री वल्लभलालजी	कामवन
सु.३	श्री दामोदरलालजी	चापां
सु.५	श्री दामोदरलालजी	राजकोट
सु.५	श्री विट्ठलेशरायजी	कां.मुम्बई
सु.८	श्री चिमनलालजी	मांडवी, गो.
सु.१२	श्री मथुरेशकुमारजी	मथुरा, पोरबंदर
सु.१३	श्री रघुनाथजी	जूनागढ़
सु.१४	गो. देवेन्द्रकुमारजी	नाथद्वारा
व.१	श्री गोकुलेशरायजी	जूनागढ़
व.३	श्री नटवरगोपालजी	(मु.-वेरावल - पोरबन्दर)
व.८	रसिकरायजी	चापासेनी नडियाद
व.८	श्री यदुनाथजी	सूरत
व.८	श्री घनश्यामलालजी	कामवन
व.१०	श्री व्रजरत्नलालजी	नडियाद
व.११	श्री विट्ठलेशरायजी	इन्दौर
व.११	श्री बालकृष्णलालजी	सूरत
व.१२	श्री विट्ठलेशरायजी	बम्बई
व.१३	श्री बालकृष्णजी	कांकरोली
व.१३	श्री कृष्णरायजी	इन्दौर
व.१३	श्री गोकुलेशजी	बम्बई

अथ ध्वजाजी–माहात्म्य एवं पधरावनी

''देख्यो कलश एक अपार। पीतध्वज फहरात तामें सूर जन बलिहार।।''

श्रीआचार्यचरण ने प्रभु की इच्छा एवं आज्ञा जानकर निकुंजनायक श्रीनाथजी का मंदिर कलश एवं ध्वजाजी सहित सिद्ध करवाया। उपरोक्त प्राचीन पदों में भी कलश एवं ध्वजाजी का माहात्म्य एवं भाव वर्णित है और इस प्रकार अनेक पदों में प्राप्त होता है।

श्रीजी के मंदिर के ऊपर सात ध्वजाजी विराजमान है। ये सातों बालक श्री प्रभुचरण के एवं सातों निधि स्वरूप के भाव से विराजित है, इसीलिये प्राचीन परंपरानुसार श्रीजी के मंदिर के अलावा कहीं भी ध्वजा कलश पृथक् नहीं होता है।

''गोपी प्रेम की ध्वजा''

ध्वजाजी की व्रज की भावना व्रजगोपिकाओं की है। ये प्रेम की पराकाष्ठा की भावना है, इसलिये श्रीजी ने अपने मस्तक के ऊपर इन्हें सर्वोच्च स्थान दिया है।

सनातन धर्म के अन्तर्गत विचार करें तो सातों लोक, सातों द्वीप, सातों महासागर के पार तक पुष्टियश का प्रसार हों, ये भाव भी ज्ञेय है। भक्तों के मनोरथपूर्णकर्ता (स्वरूप से) आप श्री सुदर्शनजी एवं ध्वजाजी विराजते हैं।

''वे देखियत गोकुल के रुख जू।
आंखी पेखी काहू नहीं सूझत मैया हो कनक कलश पर ध्वजा बताऊँ।''

आप श्री ध्वजाजी सूचिका भी है। भक्तों को प्रभु के विराजने के स्थल का सूचन आप करती है। जो भक्त बारबार प्रभु सन्मुख नहीं आ पाते उन्हें दर्शन देकर प्रभु स्मरण एवं विप्रयोग का दान भी आप ही करती है।

इसी भावना को प्रधान मानकर नित्य लीलास्थ गोस्वामी तिलकायत श्री दाऊजी महाराज (द्वितीय) ने दूरस्थ प्रदेशों में श्रीजी के भक्तों पर कृपा करणार्थ ध्वजाजी की पधरावनी प्रारम्भ की। ये शुद्ध पुष्टि का द्योतक क्रम है।

''बदरोला वृषभान की रही विलोवन हार,
ताकी बलि उन देवता लीनी भुजा पसार।''

ये ही भाव से पुष्टिस्थ प्रकार से श्रीजी स्वयं भक्तों को दर्शन देने एवं उनके भावों को अंगीकार करने ध्वजाजी के स्वरूप में पधार कर निजभक्तों को कृतार्थ कर रहे हैं।

''शेष महिमा कहि न आवे निगम गावे चार।
पीतध्वज फहरात तामें सूर जन बलिहार।''

अनंतकाल तक श्रीजी के मंदिर पर ध्वजाजी फहराए एवं भक्तों को भक्ति का दान करें, ऐसे भावों सहित श्रीजी को बारम्बार दंडवत् प्रणाम।

।। श्री सुदर्शनजी की महिमा ।।

सुदर्शन नमस्तुभ्यम् सहस्राच्युत प्रिय ।

प्रभु सुदर्शन आप भगवान् के प्यारे, हजार दाँत वाले चक्रदेव ।
मैं आपको नमस्कार करता हूँ (श्रीमद्भागवत)

श्री गोकुलनाथ जी के वचनामृत / तीज तेरस एक, पंचमी पूनो एक

पौ.	मा.	फा.	चै.	वै.	ज्ये.	आ.	श्रा.	भा.	आ.	का.	मृ.	महिना तिथिन के फल
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	बहोत सुख होय, क्लेश न होय, अर्थ पूर्ण होय
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	महाभारत होय, अशुभ, जीवनाश होय
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	अर्थपूर्ण होय, कामनापूर्ण होय
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	क्लेश होय, जीव नाश होय, कुशल सूं घर नहीं आवे
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	वस्तु लाभ होय, मित्र मिले, व्याधि मिटे
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	महाचिन्ता होय, वियोग कदाचित् घर आवे
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	सौभाग्य पावे, रत्न सहित भलीभांति सूं घर आवे
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	मिलवो न होय, बहुत बुरो होय, जीवनाश होय
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	आशा पूर्ण होय, सौभाग्य पावे, कामना सिद्ध होय
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	सौभाग्य पावे, दिन बहुत लगे, कुशल सूं घर आवे
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	क्लेश होय, जीवनाश नहीं, सौभाग्य पावे नहीं
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	मार्ग में सिद्धि, मित्र मिले, विघ्न मिटे, धन को लाभ होय

टिप्पणी व पुस्तकें मिलने का स्थान :- श्री गोवर्धन पुस्तकालय, नक्कारखाना चौक, खर्च भण्डार के पीछे, नाथद्वारा - 313301 (राजस्थान)

गणितकर्ता : त्रिपाठी राजेश्वर यदुनन्दन जी शास्त्री - 9414473016